

मीराबाई

(जन्म : सन् 1498 ई., निधन : सन् 1563 ई.)

श्रीकृष्ण प्रेम की अनन्य गायिका मीरा का जन्म मेड़ता (जि. जोधपुर) के निकट 'कुड़की' नामक गाँव में राव रतनसिंह राठौर के यहाँ हुआ था। दो वर्ष की उम्र में उनके दादा दूदाराव उन्हें मेड़ता ले गए क्योंकि मीरा की माँ का देहावसान हो गया था। दूदाराव स्वयं वैष्णव भक्त थे। उस परिवेश के प्रभावस्वरूप मीरा बचपन से ही कृष्ण-भक्ति की ओर उन्मुख हो गई। इनका ब्याह राणा सांगा के जयेष्ठ पुत्र कुँवर भोजराज के साथ हुआ था। विवाह के सात वर्ष बाद भोजराज का स्वर्गवास हो गया। अब वे अपना अधिकांश समय सत्संग एवं पूजा पाठ में बिताने लगीं। पारिवारिक यातनाओं से व्यथित होकर विरक्त हुई मीरा तथा पहले वृंदावन और बाद में द्वारिका चली गई, जहाँ जीवन के अंतिम समय तक रहीं। मीरा रचित पद 'मीरा पदावली' के नाम से प्रकाशित रूप में प्राप्त हैं। अपने आराध्य 'गिरिधर गोपाल' की विलक्षण रूपछटा के प्रति उनकी अनन्य आसक्ति अनेक भावधाराओं में बह चली है।

यहाँ संकलित पहले पद में कृष्ण प्रेम दीवानी मीरा समग्र संसार को छोड़कर साधु-संतों के साथ रहकर कृष्ण-भक्ति में लीन हो जाती है और लौकिक मोह का त्याग करके अपने आराध्य श्रीकृष्ण के अनन्य भक्तिभाव में डूब जाती है। दूसरे पद में मीरा ने श्रीकृष्ण नामरूपी रत्न की प्राप्ति से उत्पन्न असीम आनंद को अभिव्यक्त करने का प्रयत्न किया है और सत्गुरु को पाकर भवसागर पार उतरने का आनंद कवयित्री को भाव-विभोर कर देता है। तीसरे पद में कृष्ण-भक्ति में मतवाली मीरा ने संसार त्याग की चरमसीमा पर पहुँचकर 'गिरिधरनागर' की शरणागति को स्वीकार किया है।

(1)

मेरे तो गिरिधर गोपाल दूसरा न कोई ।
दूसरा न कोई साधो सकल लोक जोई ॥
भाई छोड्या बंधु छोड्या छोड्या सगा सोई ।
साधुसंग बैठि-बैठि लोकलाज खोई ॥
भगत देख राजी हुई जगत देखि रोई ।
अँसुवन जल सींच-सींच प्रेम बेलि बोई ॥
दधि मथि घृत काढ़ि लियो डार दई छोई ।
राणा विष को प्यालो भेज्यो पीय मगन होई ॥
अब तो बात फैल गई जाणे सब कोई ।
'मीरा' रामलगन लागी होणी होइ सो होई ।

(2)

पायो जी मैंने राम रतन धन पायो ।
वस्तु अमोलक दी मेरे सत्गुरु कर किरपा अपणायो ।
जनम-जनम की पूँजी पाई जग में सबै खोवायो ।
खरचै नहिं, कोई चोर न लेवै दिन-दिन बढ़त सवायो ।
सत की नाव खेवटिया सतगुरु भवसागर तरि आयो ।
मीरा के प्रभु गिरिधरनागर हरखि-हरखि जस गायो ।

(3)

पग घुँघरू बांध मीरा नाची रे, पग घुँघरू....
लोग कहैं मीरा भई बावरी, सास कहै कुलनासी रे ।
जहर का प्याला रानाजी ने भेजा, पीवत मीरा हाँसी रे ।
मैं तो अपने नारायण की, हो गई आपहि दासी रे ।
मीरां के प्रभु गिरिधरनागर, बेग मिलो अविनासी रे ।

शब्दार्थ

गिरधर गोवर्धन पर्वत को धारण करने वाले गोपाल गायों के पालक - श्रीकृष्ण दधि दही घृत घी राम रतन धन राम रूपी रत्न का धन अमोलक अमूल्य अपणायो अपनाया खेवटिया नाव चलानेवाला, नाविक हरख-हरख प्रसन्न होकर बावरी पागल कुलनासी कुल का नाश करनेवाली छोई छाछ पूँजी धन, संपत्ति

स्वाध्याय

1. निम्नलिखित प्रश्नों के एक-एक वाक्य में उत्तर लिखिए :

- (1) मीराबाई किसकी भक्ति करती थी ?
- (2) मीराबाई को कौन-सा धन मिल गया है ?
- (3) पैरों में घुँघरू देखकर मीरा की सास ने उन्हें क्या कहा ?
- (4) मीरा को विष का प्याला किसने भेजा ?
- (5) किसकी कृपा से मीरा ने 'राम रतन धन' पाया है ?

2. निम्नलिखित प्रश्नों के दो-तीन वाक्यों में उत्तर लिखिए :

- (1) गिरधर गोपाल की भक्ति करते हुए मीराबाई ने किस-किसका त्याग किया ?
- (2) मीरा के 'राम रतन धन' की क्या विशेषताएँ हैं ?
- (3) मीरा इस भवसागर को किस प्रकार पार करना चाहती हैं ?

3. निम्नलिखित प्रश्नों के पाँच-छः वाक्यों में उत्तर लिखिए :

- (1) भक्ति के मार्ग में कौन-सा संकट आया ? उससे वह कैसे पार हुई ?
- (2) मीरा के पदों के आधार पर सत्गुरु की महिमा का वर्णन कीजिए ।
- (3) भक्ति में लीन मीरा को लोग क्या-क्या कहते थे ? और क्यों ?

4. उचित जोड़े बनाइए :

'अ'	'ब'
(1) भगत देख राजी हुई	(1) किरपा कर अपणायो ।
(2) मीरा के प्रभु गिरधरनागर	(2) जगत देखि रोई ।
(3) वस्तु अमोलक दी मेरे सत्गुरु	(3) हरखि हरखि जस गायो ।
	(4) भवसागर तरि आयो ।

5. आशय स्पष्ट कीजिए :

- (1) जनम-जनम की पूँजी पाई जग में सबै खोवायौ ।
- (2) सत् की नाव खेवटिया सत्गुरु भवसागर तरि आयौ ।

योग्यता-विस्तार

- 'पायोजी मैंने राम रतन धन पायो' पद कंठस्थ कीजिए ।

शिक्षक-प्रवृत्ति

- गुजरात में मीरा के लोकप्रिय भजनों की ओड़ियो या विडियो कैसेट कक्षा में सुनाइए ।

